मोरान मोर अथनेसियस योहान प्रथम मेट्रोपॉलिटन की धन्य स्मृति।

आरंभिक जीवन : एक विनम्र शुरुआत

मोरान मोर अथनेसियस योहान प्रथम मेट्रोपॉलिटन का जन्म 8 मार्च 1950 को निरनम, केरल, भारत में हुआ, वे अपने माता-पिता के छह बच्चों में सबसे छोटे थे। उनका बचपन सादगी और परमेश्वर के प्रति समर्पण में उसी गांव में बीता जहां यीशु के शिष्य संत थोमा ने प्रथम शताब्दी ईस्वी के दौरान एक कलीसिया की स्थापना की थी।

अपनी माँ की प्रार्थनाओं के उत्तर में, उन्होंने सोलह वर्ष की छोटी उम्र में ही परमेश्वर की दिव्य बुलाहट को पाया और अगले आठ साल भारत के उत्तरी राज्यों के कोने-कोने में बिताए, शब्दों और कार्यों के माध्यम से परमेश्वर के प्रेम का प्रसार किया। उन अनुभवों के माध्यम से, उन्हें भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत, विशेषकर ग्रामीण जीवन और लोगों के प्रति गहरी सराहना और प्यार प्राप्त हुआ। वह पंजाब में सड़क के किनारे ढाबों में खाए जाने वाले दाल, रोटी और प्याज़ (उत्तर भारत में आम आदमी का मुख्य भोजन) और भारत के राजस्थान के जैसलमेर में मिले प्यारे लोगों को प्रेमपूर्वक याद करते थे।

इसी समय के दौरान, उन्होंने पढ़ने की आदत विकसित की, अक्सर हर दिन कई किताबें पढ़ा करते थे - यही एक आदत जो उन्होंने अपने सांसारिक जीवन के अंत तक कायम रखी। उन्होंने स्वयं के लिए कड़ी मेहनत की, एक सफल वक्ता बनना सीखा और जल्द ही अपने साथियों के बीच एक सम्मानित अगुआ बन गए।

इसके बाद उन्हें अमेरिका में धर्मशास्त्र का अध्ययन करने का अवसर मिला, जिसके बाद उन्होंने साढ़े चार साल तक एक स्थानीय कलीसिया के याजक के रूप में सेवा किया। अपने आस-पास के कई लोगों की तरह, वह 'अमेरिकी सपने' को पूरा करना जारी रख सकते थे, लेकिन अपने परिवार के साथ मिलकर, भारत और आसपास के देशों के लोगों की मदद करने के लिए परमेश्वर की बुलाहट के प्रतिउत्तर में, उन्होंने ऐसी सभी आकांक्षाओं को छोड़ दिया और ईश्वरीय उद्देश्य के लिए अपना जीवन आज्ञाकारी रूप से त्याग दिया।

वक्ता, लेखक और प्रभावशाली व्यक्ति:

इसी दौरान उन्हें रेडियो पर बोलने का अवसर मिला, और आगे जो हुआ वह इतिहास है। वह जल्द ही लाखों भारतीयों, खासकर देश के दक्षिण में, लोकप्रिय रेडियो प्रसारण 'आत्मीय यात्रा' की परिचित आवाज़ बन गए। मेट्रोपॉलिटन के बारे में सबसे प्यारी बात

यह थी कि वह आम आदमी से लेकर अमीर तक जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग से जुड़ सकते थे। उन्होंने विवाह, बच्चों की परवरिश, शराबबंदी आदि जैसे सामाजिक रूप से प्रासंगिक विषयों पर भावुकता से बात की। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि केरल में कोई भी घर ऐसा नहीं था जिसने उस अवधि के दौरान रेडियो पर उनकी आवाज़ न सुनी हो।

दृश्य मीडिया (आत्मिक यात्रा टेलीविजन), संगीत कार्यक्रमों और 110 से अधिक भाषाओं में रेडियो प्रसारण के माध्यम से, जो 15 मिनट के रेडियो प्रसारण के रूप में शुरू हुआ, 'आत्मिक यात्रा', जल्द ही समाज की सेवा और गरीबों और वंचितों का उत्थान करने हेतु लोगों और कलीसियाओं का एक आंदोलन बन गया।।

इसके अलावा एक सफल लेखक, मेट्रोपॉलिटन अथनेसियस योहान प्रथम ने 300 से अधिक पुस्तकें लिखीं, जो सैकड़ों विषयों पर व्यावहारिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। दर्जनों प्रमुख भाषाओं में अनुवादित इन पुस्तकों ने जाति, रंग, पंथ और धर्म से परे अनगिनत लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित किया है।

6 फरवरी, 2003 को उन्हें एक, पवित्र, सार्वलौकिक और प्रेरितीय कलीसिया की ऐतिहासिक परंपरा के अनुसार, प्रेरितीय उत्तराधिकार के अनुरूप बिशप के रूप में उनका अभिषेक हुआ और बिलीवर्स ईस्टर्न चर्च के मेट्रोपॉलिटन के रूप में स्थापित किए गए। उनके दूरदर्शी नेतृत्व में, बिलीवर्स ईस्टर्न चर्च एक विश्वव्यापी कलीसिया बन गयी, जिसमें दुनिया के चार महाद्वीपों में लगभग 300 विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले 12,000 स्थानीय कलीसिया और लाखों विश्वासी पाये जाते हैं। जिस चर्च का उन्होंने नेतृत्व किया, वह वर्तमान में भारत में तीसरा सबसे बड़ा चर्च है, और अन्य एशियाई देशों में भी इसका महत्वपूर्ण प्रभाव है।

सामाजिक योगदान:

कलीसिया की अनेक जिम्मेदारियों और व्यस्तताओं के बीच भी, मेट्रोपॉलिटन योहान ने एशिया के लाखों लोगों की पीड़ा को कभी नहीं भूला। यीशु के प्रेम से अभिभूत होकर, उसने टूटे हुए दिलों को सांत्वना दी, कोढ़ियों के घावों को साफ किया, बच्चों को गले लगाया, और वहाँ गये जहाँ बहुत से लोग नहीं जाना चाहते थे।

मोरान मोर अथनेसियस योहान प्रथम मेट्रोपॉलिटन ने उन परियोजनाओं का नेतृत्व किया जिनमें वंचित बच्चों की देखभाल, स्वच्छता और स्वच्छ पेयजल प्रदान करना, महिलाओं को सशक्त बनाना और प्राकृतिक आपदाओं के पीड़ितों को राहत और पुनर्वास लाना शामिल था।

'ब्रिज ऑफ होप' (होप फॉर चिल्ड्रन) परियोजना के माध्यम से, 150,000 से अधिक बच्चों को गरीबी से बाहर निकाला गया और उन्हें जीवन, आशा और भविष्य दिया गया। भारत के दिल्ली, में सरकार द्वारा अनुमोदित परियोजना, 'आशा गृह' में 900 से अधिक सड़क से भागे हुए बच्चों का पुनर्वास किया गया।

स्वच्छ जल परियोजना के तहत, पूरे भारत और अन्य पड़ोसी देशों में वितरित 58,000 से अधिक बायोसैंड फिल्टर के अलावा, 30,000 से अधिक बोरवेल स्थापित किए गए।

हमारे स्वच्छता अभियान के हिस्से के रूप में, सबसे अविकसित क्षेत्रों में 32,000 शौचालय स्थापित किए गए थे।

35,000 महिलाओं को व्यावसायिक कौशल से सशक्त बनाया गया, 60,000 कुष्ठ रोगियों की देखभाल की गई, 13,00,000 मच्छरदानियाँ मलेरिया-प्रवण क्षेत्रों में वितरित की गईं, 12,00,000 लोगों को मुफ्त चिकित्सा देखभाल दी गई, और 17,00,000 लोगों को आत्मनिर्भर उपकरणों और उपहारों से सहायता प्रदान की गई - ये आश्चर्यजनक संख्याएँ उनके प्रयासों के अतिबृहत प्रभाव का एक अंश मात्र हैं।

राष्ट्रीय आपदाओं के दौरान, जिस चर्च का उन्होंने नेतृत्व किया वह अक्सर राहत और पुनर्वास के लिए सबसे पहले पहुंचता था। ओडिशा में चक्रवात प्रभावित पीड़ितों के लिए 1000 घर बनाने से लेकर केरल में प्राकृतिक आपदा में खो गए मछुआरों को नावें उपहार में देने तक, उन्होंने भारत, बांग्लादेश, नेपाल, म्यांमार और श्रीलंका में प्रभावित हुए उन समुदायों की सेवा के लिए कई राहत प्रयास शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दूरदर्शी

शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल के प्रति उनके दर्शन के कारण भारत और अन्य एशियाई देशों में कई प्रतिष्ठित स्कूलों की स्थापना हुई। भारत के सर्वश्रेष्ठ अस्पतालों में से एक, 750 बिस्तरों वाला तृतीयक देखभाल अस्पताल बिलिवर्स चर्च मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल (1000 बिस्तरों के विस्तार के अगले चरण पर काम चल रहा है) जो तिरुवल्ला, केरल है इसकी स्थापना के पीछे उनका ही दर्शन था। बिलिवर्स चर्च मेडिकल कॉलेज

और हॉस्पिटल तेजी विकसित और अब यह शीर्ष मेडिकल कॉलेजों में से एक है, जो एक नर्सिंग कॉलेज, पैरामेडिकल पाठ्यक्रम और कई अन्य संबद्ध पाठ्यक्रमों के साथ स्नातक और स्नातकोत्तर चिकित्सा प्रशिक्षण प्रदान करता है।

वह एक प्रखर पर्यावरणवादी और उत्साही प्रकृति प्रेमी थे, जो इंटरनेट के युग से पहले ही लोगों को जल संरक्षणवाद और पेड़ और मिट्टी के बचाव के महत्व के बारे में सिखाते थे। उन्होंने सेंट थॉमस कम्यूनिटी में 7 एकड़ का प्राकृतिक जल भंडार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जहां कलीसिया का मुख्यालय है। वह अपनी सरल जीवनशैली के लिए जाने जाते थे, जिसे उन्होंने अपने दैनिक कार्यों और विकल्पों के माध्यम से लगातार प्रदर्शित किया। अक्सर अपनी साइकिल चलाते हुए देखे गए, वे अतिसूक्ष्मवाद को महत्व देते थे और सरल लेकिन सार्थक जीवन का उदाहरण स्थापित करते हुए प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने के समर्थक थे।

एक निरंतर विस्तारित दर्शन:

उनका दर्शन भारत और यहाँ तक कि एशिया से भी आगे तक फैली हुई थी! उन्होंने 2019 में अफ्रीका में अपना प्रभाव फैलाने के लिए कलीसिया का नेतृत्व किया। किगाली, रवांडा में बच्चों और माताओं की मदद के लिए परियोजनाओं की शुरुआत करते हुए, उन्होंने बिलीवर्स अंतरराष्ट्रीय अस्पताल और अनुसंधान केंद्र की भी कल्पना की और इसकी नींव रखी - एक बहु-विशिष्ट अस्पताल और मेडिकल कॉलेज रवांडा और पूरे पूर्वी अफ्रीका में लाखों लोगों के लिए आशा प्रदान करने हेतु निर्धारित है। 220 बिस्तरों वाले अस्पताल का पहला चरण 2026 तक चालू होने की उम्मीद है।

उनके वियोग पूर्व, उनके पास लाइबेरिया और पश्चिम अफ्रीका के अन्य देशों सहित अफ्रीका के 10 और देशों में विस्तार करने का दर्शन था।

एक अच्छे जीवन के लिए श्रद्धांजलि

8 मई, 2024 को उनका वियोग कलीसिया के लाखों सदस्यों और उन हजारों लोगों के लिए एक सदमे के रूप में आया, जिन्हें उन्होंने लगभग पांच दशकों तक परमेश्वर और मानवता की सेवा करते हुए प्रभावित किया था।

भारत के माननीय प्रधान मंत्री और श्रीलंका के राष्ट्रपति सहित कई लोगों ने अपनी संवेदना भेजी, और केरल के माननीय राज्यपाल, गोवा के माननीय राज्यपाल और कई उल्लेखनीय

केंद्रीय और राज्य के राजनीतिक नेताओं ने व्यक्तिगत रूप से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

उनके अंतिम संस्कार में अनुमानित 75,000+ शोकाकुल लोग शामिल हुए, केरल के हर एपिस्कोपल चर्च के अगुओं और अन्य धर्मों के प्रमुख अगुओं ने भाग लिया। यह तिरुवल्ला में सेंट थॉमस बिलीवर्स ईस्टर्न चर्च कैथेड्रल में पूरे राजकीय सम्मान के साथ आयोजित किया गया था।

"मोरान मोर अथनेसियस योहन प्रथम मेट्रोपॉलिटन का जीवन इस बात का प्रमाण है कि कैसे परमेश्वर एक साधारण गांव के बालक को लाखों लोगों के लिए आशा और उपचार की किरण बना सकते हैं। हालांकि वह अचानक चले गए, लेकिन उनका प्रभाव जीवित है। वह हमेशा एक ऐसे परमेश्वर में विश्वास करते थे जो जाति, रंग, पंथ और धर्म से परे हर किसी से प्यार करता है, और उन्होंने वास्तव में इन शब्दों के अनुसार जीवन जिया।"

"उनकी स्मृति सदैव अनन्त रहे"